।।ओ३म्।।

संसार के पौराणिक विद्वानों से 31 प्रश्न

लेखक

आचार्य डा0 श्रीराम आर्य

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

1058, विवेकानन्द नगर गजियाबाद (उ0प्र0)

(भारत)

© : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

शब्द सयोजक : मैसर्स आर0 के0 बुक कम्पोजिंग
आर– 5/65 राजनगर गाजियाबाद (उ0प्र0)
टेलीफोन – 4723846

मुद्रक : तायल आफसैट प्रिन्टिंग प्रैस
190/5 मैनरोड – मौजपुर, शहादरा– दिल्ली–32
टेलिफोन: 4752515, 2268948

प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
1058, विवेकानन्द नगर गाजियाबाद– 201001
दूरभाष : 4701095

मूल्य : ३:०० केवल

संस्करण : चतुर्थ संस्करण, सन् 2000 ई0

लेखक : खण्डन–मण्डनात्मक साहित्य के यशस्वी प्रणेता–
"आचार्य डा0 श्रीराम आर्य"
(कासगंज–निवासी)

"SANSAR KE POURANIK VIDVANO SE 31 PRASHAN"

Published By - Laj Pat Rai Aggarwal,
M/s Amar Swami Prakashan Vibhage
1058-Vivekanand Nagar Ghaziabad-201001 (U.P)
INDIA
Telephone : (0575) - 4701095

संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न

हम अपने पौराणिक विद्वानों से कुछ प्रश्न चिरकाल से करते चले आ रहे हैं, जिनका उत्तर हमें आज तक प्राप्त नहीं हुआ। सभी प्रश्नों के साथ उनके स्थलों को भी दर्शाया गया है। यह छोटी सी पुस्तिका अब सोलहवीं बार प्रकाशित हो रही है, गत चालीस वर्षों से हम आशा लगाये बैठे हैं कि पौराणिक समुदाय का आखिर कोई विद्वान तो इनका उत्तर देगा ही !

जो भी विद्वान इन प्रश्नों का उत्तर प्रकाशित करे उनसे प्रार्थना है कि वह उसकी एक प्रति हमारे पास या हमारे प्रकाशक – "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग– गाजियाबाद" के पास अवश्य भिजवायें, ताकि हम भी उनके उत्तर से सन्तुष्ट हो सकें, एवं इन प्रश्नों के उत्तर में क्या रहस्य अथवा वैज्ञानिकता छुपी हुई है ? इसकी जानकारी भी प्राप्त कर सकें !

"लेखक"

प्रश्न१- देवीभागवत पुराण में पुराण बनाने वाले को "धूर्त" क्यों बताया गया है ? तथा यदि व्यास जी ने पुराण बनाये हैं, तो उनमें तीनों देव (1) ब्रह्मा, (2) विष्णु, (3) महादेव की "निन्दा" क्यों की गई है ? देखिये–

(देवीभागवतपुराण स्कन्द ५,अध्याय १६, श्लोक १२)

प्रश्न२- पुराणों में शिवजी के उपनाम "महालिंग",

"चारुलिंग", "लिंगाध्यक्ष", "कामुकी", "शिखण्डी" व "धूर्त" क्यों दिये गये हैं ? इन नामों से शिवजी की "प्रशंसा" होती है या "निन्दा" ? (शिवपुराण, भाषा टीका)

प्रश्न३- मत्स्यपुराण में शिवजी द्वारा दैत्य पुत्र आडि से संभोग करके उसे मारने की कथा दी हुई है। शिवजी ने "आडि" लडके के साथ "अप्राकृतिक दुष्कर्म" करके ही उसे मारने की विधि क्यों स्वीकार की ? कोई ऐसा अन्य तरीका जैसे, गला घोटकर मारने आदि का रास्ता क्यों नहीं अपनाया था ? क्या आप भी हमारी तरह यह मानने को तैयार हैं कि पुराणों में मिथ्या कथाओं के द्वारा शिवजी को कलंकित किया गया है ? (मतस्य पुराण, अध्याय १५५)

प्रश्न४- सती व पार्वती के विवाह कराते समय ब्रह्मा जी पुरोहित बने थे। दोनों ही विवाहों में सती व पार्वती को देख कर ब्रह्मा का शुक्रपात होना तथा उस नीचे गिरे हुए वीर्य को छिपाने के लिए पैरों से मल देना व शिश्नेन्द्रिय का मर्दन करना, उसे टांगों में छिपा लेना आदि कर्म क्या ब्रह्मा जी को "चरित्रहीन" व "प्रमेह का रोगी" सिद्ध नहीं करते हैं ? ये गन्दी कथायें शिवपुराण में क्यों दी गई हैं ? देखिए-

(शिवपुराण, पार्वती खण्ड अध्याय ४६ व सती खण्ड अध्याय २०)

प्रश्न५- सती तुलसी व वृन्दा से छल करके काला मुंह (बलात्कार) करना पाताल में जाकर दैत्य नारियों से व्यभिचार करना तथा देवताओं को भी वहां जाकर उनसे

व्यभिचार के लिए प्रोत्साहित करना, क्या इससे विष्णु का "चरित्र भ्रष्ट" होना सिद्ध नहीं है? ऐसे दुर्बल चरित्र वाले व्यक्ति को क्यों "ईश्वर" मानकर पूजना चाहिये ? ये विष्णु के चरित्र शिवपुराण में दिये हुए हैं, यथा- ,

(शिवपुराण रुद्रसंहिता, संयुक्तखण्ड ४ अध्याय ४० व ४१ तथा शतरुद्रसंहिता अध्याय २२ व २३)

प्रश्न६- श्रीमदभागवत पुराण में मूर्ति आदि प्रकृतिजन्य पदार्थो के पूजने वालों को "गधा" बताया गया है। तब ऐसा गलत कार्य करके किसी को भी "विद्वानों में गधा" क्यों बनना चाहिए ? (श्रीमद्भागवत पुराण स्कन्द १० अध्याय १८४ श्लोक १३)

प्रश्न७- महाभागवतपुराण में स्वयं शंकर जी का राधा तथा पार्वती जी का "कृष्णावतार" धारण करना बताया गया है। तब पार्वती के अवतार "श्रीकृष्ण" को विष्णु या ईश्वर का अवतार कैसे माना जा सकता है ?

(महाभागवत पुराण, खण्ड ६ अध्याय ४६)

प्रश्न८- जब ब्रह्मा, विष्णु व महादेव तीनों ईश्वर हैं तो शंकर ने विष्णु के "वाराह अवतार"को मारकर उसका दांत तोड़ना, कूर्म अवतार की खोपडी उखाडना, नृसिंह अवतार का सिर काटना आदि कुकर्म करके विष्णु की दुर्गति क्यों की ? जिनकी इस प्रकार दुर्गति हो, वह "अवतार" कैसे माने जा सकते हैं ? (लिंगपुराण, पूर्वार्ध अध्याय ६३)

प्रश्न६- केदारकल्पपुराण में शिव का वीर्य पीने से

शिव भक्तों को शिवलोक की प्राप्ति तथा वहां भोगने के लिए अछुती सुन्दरी, शिव कन्यायें मिलने की बात लिखी है। तब शिवलोक व मुसलमानों के बहिश्त में क्या केवल इतना ही अन्तर नहीं है कि बहिश्त में हूरों के साथ साथ भोगने को लोंडे (गिलमें) और साथ में मिलते हैं जबकि शिवलोक में केवल अप्सरायें (हूरें) ही मिलती हैं। बतायें कि कुरान ने पुराण की नकल की है या पुराण ने कुरान की नकल की है ? तथा आप सनातनियों के लिए दोनों में कौन सा स्थान उपयुक्त रहेगा ? (केदारकल्पपुराण पृष्ठ ५-६-६ व १०)

प्रश्न१०- कलयुगी पौराणिक विद्वानों को देवीभागवत पुराण में राक्षसों को "अवतार" बताकर निन्दा क्यों की है? पुराण की उक्त व्यवस्था को गलत कैसे माना जा सकता है जबकि पुराणोक्त संपूर्ण लक्षण उनमें मिलते हैं !

(देवीभागवतपुराण स्कन्द ३ अध्याय ११)

प्रश्न ११- सौरपुराण में लिखा है कि– "दारुबन में मुनियों की अनुपस्थिति में शिवजी स्वयं नंग-धडंग तथा विष्णु को सुन्दरी (औरत) बनाकर साथ लेकर गये। शिव ने माया फैलाई तो ऋषियों की औरतें नंगी और कामातुर होकर शिवजी से जा लिपटीं और ऋषियों के नौजवान लड़के काम से व्याकुल होकर परम सुन्दरी औरतों को देखकर विष्णु से जाकर भिड़ गये। इस व्यभिचार को देखकर ऋषियों ने शाप देकर शिव को लिंगहीन कर दिया।" तब

बतावें कि क्या शिवजी व विष्णु का यह चरित्र सनातनधर्म के अनुकूल आचरण था ? परनारियों को भ्रष्ट करने वाले ऐसे देवताओं की "पूजा करने की जगह उन्हें जूते मारने का विधान" क्यों नही किया गया हैं ? (सौरपुराण अध्याय १२)

प्रश्न१२- देवीभागवतपुराण में बृहस्पति, इन्द्र, चन्द्र, ब्रह्मा आदि सभी देवताओं को तथा पौराणिक मुनियों को– "मिथ्यावादी", "कामी", "क्रोधी", "मोही", "रोगी", "पापकर्मी" तथा "परनारियों के लम्पट" एवं "छल करने में दक्ष" घोषित किया है। यही लक्षण राक्षसों के होते हैं, तब बतावें कि– पौराणिक देवताओं और राक्षसों में और किन–किन बातों में समानता है ? तथा किन–2 गुणों में विरोध बाकी है ? (देवी भागवतपुराण स्कन्द ४ अध्याय १३)

प्रश्न१३- शिवलिंग शिवजी की मूत्रेन्द्रिय एवं जलहरी पार्वती के गुप्तॉग (योनि) की प्रतिमूर्ति (नकल) है, यह बात सनातनधर्म के प्रामाणिक ग्रन्थों के निम्न स्थलों से प्रमाणित होती हैं देखिए–

(क) भविष्यपुराण में अनसूया से व्यभिचार चेष्टा व शिव को लिंगपूजा का शाप लगना।

(भविष्यपुराण प्रतिसर्ग खण्ड ४ अध्याय १७)

(ख) दारुबन में शिवलिंग का काटना व तभी से लिंग पूजा का आरम्भ होना।

(शिवपुराण कोटिरुद्रसंहिता अध्याय १२ व कूर्म पुराण उत्तरार्ध अध्याय ३८, ३६)

(ग) (भाषा शिवपुराण, नवलकिशोर प्रेस लखनऊ द्वारा प्रकाशित खण्ड ८ व अध्याय १६ पृष्ठ ७३७ से ७५० तक)

(घ) (महाभारत, अनुज्ञानपर्व अध्याय १४ व अध्याय १६१)

(ङ) (शिवपुराण, विन्ध्येश्वर संस्करण अध्याय १५ श्लोक १०४, १०५, १०८)

(च) शब्दकल्पद्रुमकोष में "लिंग" शब्द की व्याख्या करते हुए नाभियुक्त शिवलिंग पूजने का विधान मौजूद है।

(छ) (शब्दकल्पद्रुमकोष चुतर्थ काण्ड पृष्ठ २२०) में "लिंग" शब्द की व्याख्या करते हुए शिव व सती के रमण का वर्णन तथा रमण के अन्त में सती के रज और शिव के वीर्य का पतन एवं उससे शिवलिंगो की पैदायश का होना?

(ज) ब्रह्मपुराण में (शब्दकल्पद्रुमकोष चतुर्थ काण्ड पृष्ठ २२२) में भ्रगु का शाप देना लिखा है कि– "शिव का स्वरुप "योनिलिंग" होगा।" इस प्रकार की कथा सविस्तार मौजूद है। (ब्रह्मपुराण उत्तरखण्ड अध्याय २५५ कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

ऐसी दशा में प्रश्न यह है कि शिवजी का सिर, पेट या पैरों को छोड़कर उनकी मूत्रेन्द्रिय को "शिवलिंग" एवं "जलहरी" को पार्वती के गुप्ताँग की नकल बनाकर पूजने का ही विधान सनातनधर्म में क्यों जारी किया गया है ? यह भी बतावें कि शिवजी के शरीर में लिंग के अतिरिक्त अन्य भी कोई अंग था या नहीं ? अथवा क्या शिवजी

केवल लिंग रूपी आकार के ही थे ? जो उनकी सर्वत्र "शिवलिंग" के ही रुप में पूजा की जाती है।

प्रश्न१४- पद्मपुराण में सनातनी यजमान का कर्तव्य बताया गया है कि– "मतृक श्राद्ध में अपने मरे हुए बाप दादों के सिर की हड्डी पीस कर दूध के साथ श्राद्धभोजी पण्डित को प्रेम क साथ पिलायें"। जबकि चिकित्सा चक्रवर्ती ग्रन्थ के पृष्ठ 162 पर लिखा हैं कि- "सिर की हड्डी दूध में पिलाने से स्त्री को गर्भाधान हो जाता है"। तब बताये कि पण्डित जी को हड्डी पिलाने का उद्देश्य भी क्या उनके "गर्भाधान" कराना हैं और क्या ये सम्भव है ? यजमान की यह नौकरी ऐच्छिक होती है या श्राद्ध में पड़ित जी की ये सेवा करना उनका अनिवार्य कर्म होता है ? यह भी बताने की कृपा करें ?

(पद्म पुराण सृष्टि खण्ड, अध्याय १०)

प्रश्न१५- भविष्यपुराण तथा पद्मपुराण में विधान किया गया है कि– ""रण्डियों" (वेश्याओं) को चाहिये कि रविवार के दिन पुराण जानने वाले पण्डित जी को घर पर बुला कर उसके साथ बिना फीस "रतिदान" (सम्भोग) किया करें, तो उनको विष्णुलोक की प्राप्ति होगी"। यह तो रण्डियों का सौभाग्य है कि– सनातनी विद्वान उनसे विशेष प्रेम करते हैं। इतना और स्पष्ट कर दिया जावें कि रण्डियों के उद्धार का यह नुस्खा कितनी उम्र तक की रण्डियों पर लागू होगा ? वास्तव में इस तरीकें से

रण्डियों को "विष्णुलोक" मिलेगा, अथवा पौराणिक पण्डितों को मुफ्त तफरीह (मौज–मस्ती) कराने एवं रण्डियों की रात भर की पसीने की कमाई पर हाथ साफ कराने के लिये पुराणकार ने यह व्यवस्था की है ? यह स्पष्ट नहीं है, कृपया इसका उल्लेख भी अवश्य करें।

(भविष्यपुराण उत्तरपर्व, अध्याय १११ तथा पद्मपुराण सृष्टिखण्ड अध्याय २०)

प्रश्न१६- भविष्यपुराण के अनुसार मूर्तिपूजा करने का विधान चारों युगों में केवल द्वापर युग के लिए ही विहित था। तो कलयुग में उसका क्रम जारी रखना पुराण के विरुद्ध होने से पापकर्म हुआ। पुराण की यह व्यवस्था पौराणिक पण्डितों को क्यों माननीय है ?

(भविष्यपुराण प्रतिसर्ग २२ श्लोक ११ व १२)

प्रश्न१७- ईसा, मूसा, नूह, अकबर, बाबर, हुमायूं, कबीरदास, रैदास, नादिशाह, तैमूरलंग, तुलसीदास, सूरदास, शिवाजी एवं अंग्रेजों का भारत में आना और उनका शासन करना तथा १० वें लार्ड तक का एतिहासिक वर्णन जब पुराणों में भरा पड़ा है तो पुराणों के महाभारत कालीन व्यास ऋषि कृत बनाना, कोरा पाखण्ड नहीं है तो और क्या है ? क्या वेदव्यास जी भारत में अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत ही पैदा हुए थे ?

(भविष्यपुराण प्रतिसर्ग खण्ड ६, अध्याय २, तथा खण्ड ४ अध्याय १७ व २२)

प्रश्न१८- जब ब्रह्मा, विष्णु और महादेव पुराणों के

अनुसार चरित्रों की दृष्टि से स्वच्छ नहीं हैं और अपनी–अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए बड़े–बड़े युद्ध, यज्ञ व तप करते रहते हैं, तो उनकी पूजा व उपासना छोड़कर पौराणिकों को भी क्यों नही उसी एक जगदाधार, परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान करना चाहिए जो सारे विश्व के प्राणियों एवं पुराणों के इन फर्जी देवताओं की उत्पत्ति व पालनकर्त्ता तथा सबकी मनोकामनाओं की पूर्ति करता है? क्या इन चरित्रहीन देवताओं को पूजने से भक्त भी वैसे ही नहीं बनेंगे ? इसमें क्या गारण्टी है ?

प्रश्न१९- राम के सरयू नदी में डूबने से, कृष्ण के पैर में बहेलिया के द्वारा बाण मारने से, नृसिहं जी का शंकर जी द्वारा सिर काटा जाना एवं उनकी खाल उतारने से नृसिंहजी का प्राणान्त हुआ था। क्या अवतारों का अन्त इसी प्रकार होता है ? और क्या जिनका अन्त इस प्रकार होता है वे भी अवतार माने जाने योग्य हैं ?

प्रश्न२०- रामावतार के निम्न मुख्य कारण पुराणों में दिए गये हैं–

(क) सती वृन्दा का सतीत्व धोखे से भंग करने पर उसने विष्णु को शाप दिया जिससे "रामावतार" पैदा हुआ। (शिवपुराण रुद्रसंहिता युद्धखण्ड अध्याय २३)

(ख) नारद के शाप के कारण "रामावतार" पैदा हुआ।

(शिवपुराण रुद्रसंहिता अध्याय ४)

(ग) व्यभिचार की अतृप्त वासनाओं की पूर्ति के लिए

विष्णु जी "अवतार" लेते हैं। (धर्मसंहिता अध्याय १०)

(घ) भृगुशाप के कारण "रामावतार" का अवतरण हुआ। (देवी भागवत स्कन्द ३ अध्याय १२)

इनसे सिद्ध है कि "रामावतार" विष्णु को पापों में लगे शापों का दण्ड भुगतने के लिए हुआ था, उसका उद्देश्य लोककल्याण नहीं था। क्या पुराणों के उपरोक्त प्रमाणों को गलत घोषित करके कोई पौराणिक विद्वान यह सिद्ध कर सकता है कि "रामावतार" स्वेच्छा से लोककल्याण के लिए हुआ था ? स्मरण रखने की बात यह भी है कि– "राम या कृष्ण की स्वेच्छा से विष्णु द्वारा अवतार धारण करना" मानने वालों को देवीभागवतपुराण में मूर्ख बताया गया है। (देवीभागवतपुराण स्कन्द ५ अध्याय १ श्लोक ४७ से ५०)

प्रश्न२१- पद्मपुराण की एक चटपटी कथा आपको बताते हैं। शिवजी ने एक बार (देवताओं को) दावत दी, दावत समाप्त होने के बाद एक शिवदूती वहां आई उसने शिवजी से कहा कि "मुझे ऐसा भोजन कराओ जो तिब्बत में कहीं न मिलता हो" शिवजी ने कहा "तुम मेरी उपस्थेन्द्रिय सहित दोनों वृषण (अण्डकोश) खा लो, तो तुम्हारी तृप्ति हो जावेगी"। अब यहां प्रश्न यह पैदा होता है कि एक स्त्री को शिश्न (लिंग) व "वृषण" (अण्डकोश) खिलाना क्या सनातनी मर्यादा के अनुकूल कर्म था ? जिसका शिवजी ने पालन किया, अथवा लिंगेन्द्रिय सहित वृषण, स्त्रियों को खिलाने की वर्तमान सनातनी प्रथा के आदि प्रचारक क्या

महामहिम गुरुघण्टाल शंकर जी ही थे ? (पद्मपुराण)

प्रश्न२२- शिवपुराण में बहुत से द्रष्टान्त देकर लिखा है कि–

(१) "जितने भी ऋषि, मुनि व देवता शिव के भक्त होने के कारण, शिव की माया के प्रभाव में आये वे सभी महाव्यभिचारी बन गये।"

(२) "दारूबन में अपने भक्तों की स्त्रियों के साथ शिवजी ने व्यभिचार किया।"

(३) "महानन्दा वेश्या, जो शिवजी की भक्तिन थी उससे शिवजी ने फीस देकर वेश्यागमन किया।"

इन सब बातों को जानते हुए भी लोग शिवजी के भक्त बनकर लिंग (मूत्रेन्द्रिय) को पूजते हैं तो क्या इसका अर्थ यह नहीं हैं कि वे लोग शिवमाया के प्रभाव में आकर व्यभिचारी बनना चाहते हैं अथवा वे लिगोंपासक होने से अपने को व्यभिचारी घोषित करते है ? शिवपुराण में आखिर शिवमाया के व्यभिचार वाले प्रचार प्रकरण को अत्याधिक महत्व एवं विशेष प्रभाव के साथ उसको वर्णन करने का आखिर क्या तात्पर्य है ? (शिवपुराण उमासंहिता अध्याय ४)

प्रश्न२३- ब्रह्मा, विष्णु व महादेव ये तीनों एक दूसरे के बाप होने का दावा करते हैं। ऐसा पुराणों में वर्णित है, तब आप बतावें कि वास्तव में इन तीनों में "बाप" बनने का किसका दावा सच्चा है और क्यों ?

प्रश्न२४- पद्मपुराण में न्याय, वैशेषिक एवं सांख्य दर्शन तथा मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द व अग्निपुराण इनको नरक में ले जाने वाले "तामस शास्त्र" के रूप में बताया गया है। कृपया हेतु व प्रमाणों से पुराण के इस दावे को सत्य सिद्ध करें(पद्मपुराण खण्ड, अध्याय २३६, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

प्रश्न२५- जबकि शिवपुराण "तामस" व "नरक" में ले जाने वाला पुराण है और शिवजी भी उसी के अनुसार व्यभिचार के प्रचारक देवता होने से भक्तों को नरक में ले जाने वाले हैं तो फिर ऐसे तामसीदेवता के बहिष्कार की व्यवस्था सनातनी विद्वान क्यों नहीं करते हैं ?

प्रश्न२६- महाभारत में लिखा है कि– " नारायण ऋषि ने अपने सिर में से एक सफेद व एक काला बाल उखाड़ कर फेंक दिया, सफेद बाल "रोहणी" के गर्भाशय में गया जिससे "बलराम" बनकर प्रकट हुआ था तथा काला बाल "देवकी" के गर्भ में प्रविष्ट होकर "कृष्ण" के रूप में प्रकट हुआ"। तो नारायण ऋषि के सिर के काले बाल वाले अवतार "श्रीकृष्ण जी" को ईश्वर का अवतार कैसे माना जा सकता है ? (महाभारत आदिपर्व अध्याय १६६)

प्रश्न२७- राजा व्युषिताश्व बेऔलाद मर गया तो रानी ने उसके शव के साथ सोकर सात लड़के पैदा किये थे। यह कथा महाभारत में दी गई हैं प्रश्न यह है कि– "क्या मुर्दो से सम्भोग करे औलाद पैदा करने की विधि अब भी

सनातनधर्म में चालू है ?" क्या परीक्षण द्वारा इसे सत्य सिद्ध किया जा सकता है ? (महाभारत आदि पर्व अध्याय १२०)

प्रश्न२८- पद्मपुराण में अर्जुन को अर्जुनी तथा नारद को "नारदी" (स्त्रियां) बनाकर कृष्ण का उनके साथ सम्भोग करने का वर्णन दिया गया है।। क्या कृष्ण का यह आचरण वेदानुकूल था ? क्या हमारे सनातनी विद्वान बताने का साहस करेंगे कि यह आचरण किस हिन्दू शास्त्र सम्मत था ? (पद्मपुराण पातालखण्ड अध्याय ७४ व ७५)

प्रश्न२९- श्रीमद्भागवतपुराण में लिखा है कि– ब्रह्माजी ने असुर पैदा किये, परन्तु वही पैदा किये गये असुर ब्रह्मा जी की खूबसूरती पर मोहित हो गये और अपनी पाप वासना मिटाने के लिए ब्रह्मा जी के ऊपर चढ़ गये। ब्रह्मा जी भागते–भागते "विष्णु जी की शरण में गये। क्या ऐसा कमजोर ब्रह्मा भी ईश्वर हो सकता है" ? व जगतकर्त्ता माना जा सकता है जिससे असुरों ने भोग किया हो ओर जो उनसे भी स्वयं अपनी रक्षा न कर सका हो

(श्रीमद्भागवतपुराण स्कन्द ३ व अध्याय २०)

प्रश्न३०- शिवपुराण में वर्णित है कि– विश्वामित्र के पुत्रों ने अपने आचार्य गर्ग ऋषि की गौ को मार कर उससे श्राद्ध करके, गौमाँस खाने का एवं उससे उनकी सद्गति होने की कथा दी है। प्रश्न यह है कि शिवपुराण में इस कुकृत्य की निन्दा न करके, बल्कि उसे उलटा विशेष गौरव के साथ इसका वर्णन होने से गौवध द्वारा

श्राद्ध कराने का विधान जब सनातन धर्म में सिद्ध है, तो क्या इसे वेदानुकूल सिद्ध किया जा सकता है ?

(शिवपुराण उमासंहिता अध्याय ४१)

प्रश्न३१- वशिष्ठ स्मृति में कहा गया है कि– "कृष्णवर्णा या रामारमणायेव न धर्माय न धर्मायेत्"। अर्थात् काले वर्ण की सुन्दर स्त्रियां रमण (भोग) के लिए हो सकती हैं किन्तु उनको पत्नी बनाकर दान यज्ञादि धर्म कृत्य न करें। सनातन धर्म के इस शास्त्रीय आदेश का धार्मिक एवं वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करें और बतायें कि गोरी स्त्रियों पर दया एवं काली स्त्रियों पर सनातनधर्म इतना क्रूर क्यों है ?

(वशिष्टस्मृति अध्याय १८ श्लोक २६)

यह उपरोक्त केवल ३१ प्रश्न उदधृत किये जाते हैं, और इनके अनुयायी सनातनधर्म विद्वानों से अपेक्षा की जाती है कि इनके समुचित उत्तर हमें सनातनी विद्वानों द्वारा अवश्य प्राप्त होंगे, क्योकि इतने चिरकाल (४० वर्षो) में उन्होने इन प्रश्नों के उत्तर अवश्य खोज लिये होगें। उत्तर प्राप्त होने पर हम उनका हृदय से स्वागत करेंगे।

निवेदक-

"डा० श्रीराम आर्य"

कासगंज, जिला-एटा

(उ.प्र.)